॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥

॥ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासाय नमः ॥

## अग्रस्वामी कृत

# ॥ सीताराम प्रपत्ति अष्टक ॥

*This text has been prepared by*
*Vishal Pandey (B.Tech IIT Kanpur)*
*with the blessings of*
***Chitrakūṭa Tulasīpīṭhādhiśvara***
***Jagadguru Rāmānandāchārya***
***Śrī Svāmī Rāmabhadrāchārya***

# प्रपत्ति अष्टक

संसारसागरान्नाथ पुत्रमित्रगृहाकुलात् ।
गोप्तारौ मे दयासिन्धू प्रपन्नभयभञ्जनौ ॥ १ ॥

हे नाथ ! संसार रूपी सागर से, पुत्र, मित्र और गृह-जनों की आकुलता से — हे सीतारामजी ! आप दोनों ही मेरे रक्षक हैं, दया के सागर हैं, और शरणागतों के भय का नाश करने वाले हैं।

O Supreme Lord ! From the ocean of worldly existence, and from the anxieties of children, friends, and household ties — Sri Sitarama ! You both are my protectors, oceans of compassion, and destroyers of the fears of those who surrender to You.

योऽहं ममास्ति यत्किंचिदिहलोके परत्र च ।
तत्सर्वं भवतोरेव चरणेषु समर्पितम् ॥ २ ॥

मैं जो हूँ और मेरा जो कुछ भी है, इस लोक में और परलोक में, वह सब आप दोनों का ही है, और आपके चरणों में समर्पित है।

Whatever I am, and whatever belongs to me, in this world and in the next, all of that is Yours alone, and is offered at Your feet.

अहमस्म्यपराधानामालयस्त्यक्तसाधनः ।
अगतिश्च ततो नाथौ भवन्तावेव मे गती ॥ ३ ॥

मैं अपराधों का आलय हूँ, साधनों से रहित हूँ। मैं निरुपाय हूँ, इसलिए हे नाथ ! आप दोनों ही मेरी गति हैं।

I am reservoir of offenses, devoid of any means. I am helpless; therefore, O Sri Sitarama ! — You both are my only refuge.

तवास्मि जानकीकान्त कर्मणा मनसा गिरा।
रामकान्ते तवैवास्मि युवामेव गतिर्मम॥ ४॥

हे जानकीकान्त श्रीराम ! मैं कर्म, मन और वाणी से आपका ही हूँ। हे रामकान्ता श्रीजानकी ! मैं केवल आपका ही हूँ; आप दोनों ही मेरी परम गति हैं।

O Janakī-Kānta ! I am Yours by action, mind, and speech. O Rāma-Kāntā ! I belong only to You; You both are my sole refuge.

शरणं वां प्रपन्नोऽस्मि करुणानिकराकरौ।
प्रसादं कुरुतां दासे मयि दुष्टेऽपराधिनि॥ ५॥

हे श्रीसीतारामजी ! मैं आपकी शरण में आया हूँ, क्योंकि आप करुणा के सागर हैं। इस दुष्ट और अपराधी दास पर कृपा कीजिए।

O both of You ! I have taken refuge in You — the ocean of compassion. Please show grace to this sinful and guilty servant.

मत्समो नास्ति पापात्मा त्वत्समो नास्ति पापहा।
इति सञ्चिन्त्य देवेश यथेच्छसि तथा कुरु॥ ६॥

मेरे समान पापी कोई नहीं, और आपके समान पापों का नाश करने वाला कोई नहीं। ऐसा सोचकर, हे देवेश! जैसा आपकी इच्छा हो वैसा कीजिए।

There is no sinner like me, and there is no remover of sins like You. Thinking thus, O Supreme Lord ! do as You wish.

अन्यथा हि गतिर्नास्ति भवन्तौ हि गतिर्मम।
एतत्कारुण्यभावेन कृपां कुरु दयानिधे॥ ७॥

क्योंकि अन्य कोई गति नहीं है; अतः आप दोनों ही मेरी गति हैं। इस करुणा के भाव से — हे दयानिधि ! कृपा कीजिए।

There is no other refuge; You both are my only refuge. With this feeling of compassion — O Ocean of Mercy ! please show Your grace.

दासोऽहं शेषभूतोऽहं तवैव शरणागतः।
अपराधितोऽपि दीनोऽहं पाहि मां करुणाकर॥ ८॥

मैं आपका दास हूँ, मैं आपका शेषभूत हूँ, मैं केवल आपकी शरण में आया हूँ। मैं अपराधी और दीन हूँ। हे करुणाकर ! — मुझ पर कृपा कीजिए।

I am Your servant, I am Your subservient, I have taken refuge only in You. Though sinful and wretched, protect me, O Ocean of Mercy !.

इति श्रीअग्रस्वामिकृतं श्रीसीताराम प्रपत्त्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

हे जीवनधन लाड़िली, हे नृपलालन मीत। हे मनभावन भाभिनी, दीजै युग पद प्रीत॥
हे नटनागर नागरी, छबिआगरि गुणखानि। हे शरणागत रक्षिका, निज चेरीकरि जानि॥
हे शशिबदनी छबि सुधा, अधराधर मृदुबैन। पिय चकोर चित लुब्ध नित, पियत माधुरी नैन॥
हे सुखमाकर साँवरे, श्याम सलोने लाल। मृगनयनी छबिजाल में, फँसे रहौ ज्यों माल।
हे गुण नाहक नेह निधि, जगजीवन विश्राम॥ सियारमण सुखमा भवन, बड़ भागी सुख धाम॥
हे निमिबंश उजागरी, अवधबिहारीबाम। हे रघुवंश प्रकाशकर, युगल चन्द अभिराम॥
हे कौसल्या लाड़िली, जयति सुनैनाबाल। जयति जनकजाया भली, जय दशरथ नृपलाल॥
हे रसिकनजीवनजरी, युगयुग पूरणचन्द। घटौ बढ़ौ कबहूं नहीं, नित्य सच्चिदानन्द ॥